अध्याय
09

साखियाँ एवं सबद

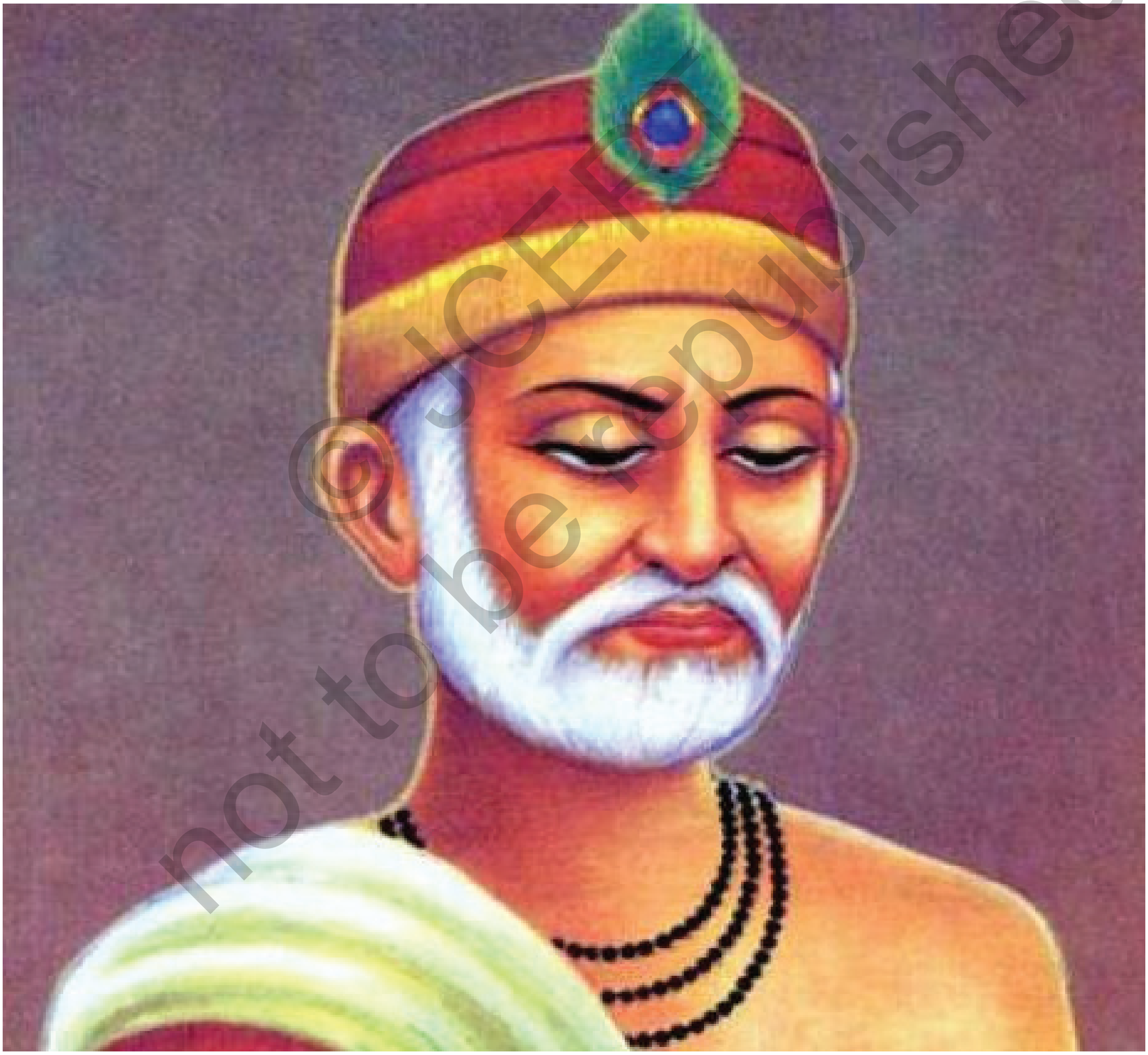

© JCERT not to be republished

कबीरदास

कवि परिचय

कवि परिचय

- कबीरदास
- जन्म— कबीरदास का जन्म सन् 1398 में काशी में हुआ।
- मृत्यु— इनकी मृत्यु 1518 में मगहर में हुई।
- शिक्षा— कबीर ने विधिवत शिक्षा नहीं पाई थी परंतु सत्संग पर्यटन तथा अनुभव से उन्होंने ज्ञान प्राप्त किया था।
- कबीर भक्तिकाल की निर्गुण संत कवि थे। कबीर अत्यंत उदार निर्भय तथा सद्‌गृहस्थ संत थे।
- राम या रहीम की एकता में विश्वास रखने वाले कबीर ने ईश्वर के नाम पर चलने वाले हर तरह के पाखंड भेदभाव या कर्मकांड का खंडन किया है।
- उन्होंने अपने काल में धार्मिक या सामाजिक भेदभाव से मुक्त मनुष्य की कल्पना की।
- सत्य, अहिंसा, ईश्वर-प्रेम, ज्ञान तथा वैराग्य, गुरुभक्ति, सत्संग या साधु-महिमा के साथ आत्मबोध या जगत-बोध की अभिनय उनके कवि में हुई है।
- प्रमुख रचनाएँ:- सखी, सबद या रमैनी।
- कबीर की रचनाएँ मुख्यत: 'कबीर ग्रंथावली' में संग्रहित है, किंतु कबीर पंथ में उनकी रचनाओं का संग्रह 'बीजक' ही प्रमाणित माना जाता है।
- कबीर की कुछ रचनाएँ 'गुरुग्रंथ साहब' में भी संकलित है।
- भाषा शैली- कबीर की काव्य-भाषा 'सुधुक्कड़ी' है, जिसे 'पंचमाली खिचड़ी' भी कहा जाता है।

© JCERT not to be republished

पाठ-परिचय

पाठ परिचय

- ‘साखी’ शब्द ‘साक्षी’ शब्द का ही (तद्भव) बदला हुआ रूप है। साक्षी शब्द साक्ष्य से बना है। जिसका अर्थ होता है- प्रत्यक्ष ज्ञान अर्थात् जो ज्ञान सबको स्पष्ट दिखाई दें।
- ईश्वर प्राप्ति के लिए सच्चा ज्ञान को आवश्यक बताया गया है।
- बाहरी आडम्बर और जाति-पाति का विरोध किया गया है।
- ईश्वर प्राप्ति को मनुष्य का अंतिम लक्ष्य बताया है।
- ईश्वर-भक्त को संसार की परवाह नहीं करने की सलाह देते हैं।
- जीवन के कड़वाहट को दूर करने के लिए सत्संग को आवश्यक बताया है।
- कर्म की श्रेष्ठता पर बल दिया गया है।

© JCERT not to be republished

साखियाँ

काव्यांश-1

मानसरोवर सुभर जल, हंसा केलि कराहिं।

मुकताफल मुकता चुगैं, अब उड़ि अनत न जाहिं।।

साखी-1

शब्दार्थ- मानसरोवर-कैलास पर्वत के पास एक झील, मन रुपी सरोवर। सुभर- अच्छी तरह भरा हुआ। हंसा- हंस, जीवात्मा। केलि- क्रीड़ा। मुकताफल- मोती। अनत- अन्यत्र /दूसरे स्थान पर।

प्रसंग- प्रस्तुत काव्यांश 'साखियाँ एवं सबद' शीर्षक पाठ से लिया गया है। इसके रचयिता कबीरदास जी हैं। इस काव्यांश में ईश्वर की प्राप्ति को ही अंतिम सुख बताया गया है।

व्याख्या- मानसरोवर स्वच्छ जल से पूरी तरह भरा हुआ है। उसमें हंस क्रीड़ा करते हुए मोतियों को चुग रहे हैं। वे इस आनंददायक स्थान को छोड़कर अन्यत्र नहीं जाना चाहते हैं। आशय यह है कि जीवात्मा प्रभुभक्ति में लीन होकर मन में परम आनंद प्राप्त कर रहे हैं। वे इस सुख (मुक्ति) को छोड़कर अन्यत्र कहीं नहीं जाना चाहते।

विशेष- i. मानसरोवर एवं हंसा में रूपक अलंकार है।
ii. ईश्वर की प्राप्ति के बाद कोई इच्छा शेष नहीं रह जाती।
iii. मुक्ता, हंसा आदि उपमानों का सुन्दर प्रयोग।

काव्यांश-2

प्रेमी ढूँढ़त मैं फिरौं, प्रेमी मिले न कोइ।
प्रेमी कौं प्रेमी मिलै, सब विष अमृत होइ।।

साखी-2

शब्दार्थ- प्रेमी-प्रेम करने वाले (प्रभु-भक्त)। फिरौं -घूमता हूँ। होइ-हो जाता है।

प्रसंग- प्रस्तुत काव्यांश 'साखियाँ एवं सबद' शीर्षक पाठ से लिया गया है। इसके रचयिता कबीरदास जी हैं।इस काव्यांश में कवि ने एक ईश्वर भक्त का दूसरे ईश्वर भक्त से मिलने के बाद जीवन की कड़वाहट ख़त्म हो जाने की बात कही है।

व्याख्या- कवि कहता है कि मैं ईश्वर प्रेमी अर्थात् प्रभु-भक्त को ढूँढ़ता फिर रहा था पर अहंकार के कारण मुझे कोई भक्त न मिला। जब दो सच्चे प्रभु-भक्त मिलते हैं तो मन की सारी विष रूपी बुराइयाँ समाप्त हो जाती हैं तथा मन में अमृतमयी अच्छाइयाँ आ जाती हैं।

विशेष- i. जीवन में सद्गुणों के विकास के लिए ईश्वर भक्त की संगति को आवश्यक बताया गया है।
ii. 'सब विष अमृत होइ' में रुपक अलंकार है।

© JCERT not to be republished

काव्यांश-3

हस्ती चढ़िए ज्ञान कौ, सहज दुलीचा डारि।

स्वान रूप संसार है, भूँकन दे झख मारि।।

साखी-3

शब्दार्थ- हस्ती-हाथी। सहज-प्राकृतिक समाधि। दुलीचा-कालीन। सुस्वान-कुत्ता। भूँकन दे-भौंकने दो। झख मारि —समय बरबाद करना।

प्रसंग- प्रस्तुत काव्यांश 'साखियाँ एवं सबद' शीर्षक पाठ से लिया गया है इसके रचयिता कबीरदास जी हैं इस साखी में ईश्वर की प्राप्ति के लिए ज्ञान को अनिवार्य बताया गया है।

व्याख्या- कवि ज्ञान प्राप्ति में लगे साधकों को संबोधित करते हुए कहता है कि तुम ज्ञानरूपी हाथी पर सहज समाधि रूपी आसन (कालीन) बिछाकर अपने मार्ग पर निश्चिंत होकर चलते रहो। यह संसार कुत्ते के समान है जो हाथी को चलते देखकर निरुद्देश्य भौंकता रहता है अर्थात् साधक को ज्ञान प्राप्ति में लीन देखकर दुनियावाले अनेक तरह की उल्टी-सीधी बातें करते हैं परंतु उसे दुनिया के लोगों की निंदा की परवाह नहीं करनी चाहिए।

विशेष- i. हस्ती,श्वान आदि प्रतीकों का प्रयोग सुंदर बन पड़ा है।
ii. दोहे में रूपक अलंकार है।

काव्यांश-4

पखापखी के कारनै, सब जग रहा भुलान।

निरपख होइ के हरि भजै, सोई संत सुजान।

© JCERT not to be republished

साखी-4

शब्दार्थ- पखापखी-पक्ष और विपक्ष। कारनै-कारण। भुलान-भूला हुआ। निरपख-निष्पक्ष। भजै-भजन, स्मरण करना। सोई-वही। सुजान-चतुर, ज्ञानी, सज्जन।

प्रसंग- प्रस्तुत काव्यांश 'साखियाँ एवं सबद' शीर्षक पाठ से लिया गया है। इसके रचयिता कबीरदास जी हैं। इस काव्यांश में पक्ष-विपक्ष को ईश्वर प्राप्ति के मार्ग में बाधा बताया गया है।

व्याख्या- लोग अपने धर्म, संप्रदाय (पक्ष) को दूसरों से बेहतर मानते हैं। वे अपने पक्ष का समर्थन तथा दूसरे की निंदा करते हैं। इसी पक्ष-विपक्ष के चक्कर में पड़कर वे अपना वास्तविक उद्देश्य भूल जाते हैं। जो धर्म-संप्रदाय के चक्कर में पड़े बिना ईश्वर की भक्ति करते हैं वही सच्चे ज्ञानी हैं।

विशेष- i. पक्ष-विपक्ष भक्ति के लिए बाधक है।
ii. तद्भव शब्दों का प्रयोग है।

काव्यांश-5

हिंदू मूआ राम कहि, मुसलमान खुदाइ।
कहै कबीर सो जीवता, जो दुहुँ के निकटि न जाइ ॥

साखी-5

शब्दार्थ- मूआ- मर गया। सो जीवता- वही जीता है। दुहुँ- दोनों। निकटि- पास, नजदीक। जाइ- जाता है।

प्रसंग- प्रस्तुत काव्यांश 'साखियाँ एवं सबद' शीर्षक पाठ से लिया गया है इसके रचयिता कबीरदास जी हैं। इस काव्यांश में सांप्रदायिक भेदभाव को ईश्वर की प्राप्ति में बाधक बताया गया है।

व्याख्या- निराकार ब्रह्म की उपासना की सीख देते हुए कवि कहता है कि हिंदू राम का जाप करते हुए तथा मुसलमान खुदा की बंदगी करते हुए मर मिटे तथा आने वाली पीढ़ी के लिए कट्टरता छोड़ गए। वास्तव में राम और खुदा तो एक ही हैं। कवि के अनुसार जो राम और खुदा के चक्कर में न पड़कर प्रभु की भक्ति करता है वही सच्चे रूप में जीवित है और सच्चा ज्ञानी है।

विशेष- i. जीवन उसी का सार्थक होता है।
ii. जो ईश्वर के स्वरूप में भेदभाव नहीं करता।
iii. आडम्बर को छोड़कर सच्ची भक्ति करने से ही ईश्वर प्राप्ति संभव है।

© JCERT not to be republished

काव्यांश-6

काबा फिरि कासी भया, रामहिं भया रहीम।

मोट चून मैदा भया, बैठि कबीरा जीम।।

साखी- 6

शब्दार्थ- काबा- मुसलमानों का पवित्र तीर्थ स्थान। कासी- हिंदुओं का पवित्र तीर्थ स्थल। भया- हो गया। मोट चून- मोटा आटा। बैठि- बैठकर। जीम- भोजन करना।

प्रसंग- प्रस्तुत काव्यांश 'साखियाँ एवं सबद' शीर्षक पाठ से लिया गया है, इसके रचयिता कबीरदास जी हैं। इस काव्यांश में सच्चा ईश्वर भक्त के लिए काबा एवं काशी में फर्क नहीं होने की बात कही गई है।

व्याख्या- कवि कहता है कि मैं जब राम-रहीम, हिंदू-मुसलमान के भेद से ऊपर उठ गया तो मेरे लिए काशी तथा काबा में कोई अंतर नहीं रह गया। मन की जिस कलुषिता के कारण जिस मोटे आटे को अखाद्य समझ रहा था, अब वही बारीक मैदा हो गया, जिसे मैं आराम से खा रहा हूँ। अर्थात् मन से सांप्रदायिकता तथा भेदभाव की दुर्भावना समाप्त हो गई।

विशेष- i. हिंदू मुस्लिम एकता का संदेश है।
ii. इसमें रूपक अलंकार है।

© JCERT not to be republished

काव्यांश-7

ऊँचे कुल का जनमिया, जे करनी ऊँच न होइ।

सुबरन कलस सुरा भरा, साधू निंदा सोइ॥

शब्दार्थ– ऊँचे कुल– अच्छा खानदान। जनमिया– पैदा होकर। करनी– कर्म। सुबरन– सोने का। कलस– घड़ा। सुरा– शराब। निंदा– बुराई। सोइ– उसकी।

साखी–7

प्रसंग– प्रस्तुत काव्यांश 'साखियाँ एवं सबद' शीर्षक पाठ से लिया गया है इसके रचयिता कबीरदास जी हैं। इस काव्यांश में कर्म की श्रेष्ठता का प्रतिपादन किया गया है।

व्याख्या– कर्मों के महत्त्व को बताते हुए कवि कहता है कि ऊँचे कुल में जन्म लेने मात्र से कोई व्यक्ति बड़ा नहीं बन जाता है। इसके लिए अच्छे कर्म करने पड़ते हैं। इसी का उदाहरण देते हुए कबीर कहते हैं कि सोने के पात्र में शराब भरी हो तो भी सज्जन उसकी निंदा ही करते हैं।

विशेष– i. कर्म की श्रेष्ठता पर बल है।
ii. आंतरिक सुंदरता पर बल दिया गया है।

© JCERT not to be republished

सबद

काव्यांश–1

मोकों कहाँ ढूँढ़े बंदे, मैं तो तेरे पास में।
ना मैं देवल ना मैं मसजिद, ना काबे कैलास में।
ना तो कौने क्रिया–कर्म में, नहीं योग बैराग में।
खोजी होय तो तुरतै मिलिहौं, पल भर की तालास में।
कहैं कबीर सुनो भई साधो, सब स्वाँसों की स्वाँस में।।

शब्दार्थ– मोको-मुझको। बंदे-मनुष्य/भक्त। देवल-देवालय, मंदिर। काबा-मुसलमानों का तीर्थ स्थल। कैलास-कैलाश पर्वत जहाँ भगवान शिव का वास माना जाता है। कोनो-किसी। क्रिया-कर्म-मनुष्य द्वारा ईश्वर की प्राप्ति के लिए किए जाने वाले बाह्य कर्म जिसे कबीर ने आडम्बर कहा है। योग-योग साधना। बैराग-वैराग्य। तुरते- तुरंत। मिलिहौं- मिलेंगे। खोजी- तलाश करने वाला। तलास-खोज।

काव्यांश-1

प्रसंग- प्रस्तुत काव्यांश 'साखियाँ एवं सबद' शीर्षक पाठ से लिया गया है। इसके रचयिता कबीरदास जी हैं। इस सबद में ईश्वर को सर्व व्यापक एवं सबके ह्रदय में वास करने वाला बताया गया है।

व्याख्या- कवि कहते हैं मनुष्य जीवन-भर ईश्वर को पाने का उपाय करता है तथा नाना प्रकार की क्रियाएँ करता है, पर उसे प्रभु के दर्शन नहीं होते। कबीर निराकार ब्रह्म के माध्यम से कहते हैं कि हे मनुष्य! तू मुझे कहाँ -कहाँ खोजता है? मैं तो तुम्हारे पास में ही हूँ। मैं किसी मंदिर-मस्जिद या देवालय में नहीं रहता हूँ न ही किसी तीर्थ स्थान पर। मैं किसी पाखंडी क्रियाओं से भी नहीं मिल सकता। जो मुझे सच्चे मन से खोजता है उसे मैं पल भर में ही मिल सकता हूँ क्योंकि मैं तो हर प्राणी की प्रत्येक सांस में मौजूद हूँ। मुझे खोजना है तो अपने मन में खोज लो।

विशेष– i. 'ना तो कौने क्रिया-कर्म में, नहीं योग बैराग में' पंक्ति में अनुप्रास अलंकार है।

ii. बाह्यडम्बर का विरोध है।

iii. मन की पवित्रता पर बल है।

iv. ईश्वर सर्वत्र व्याप्त है।

काव्यांश-2

संतौं भाई आई ग्याँन की आँधी रे।
भ्रम की टाटी सबै उडाँनी, माया रहै न बाँधी।।
हिति चित की द्वै थूनी गिराँनी, मोह बलिंडा तूटा।
त्रिस्नाँ छाँनि परि घर ऊपरि, कुबधि का भाँडाँ फूटा।।
जोग जुगति करि संतों बाँधी, निरचू चुवै न पाणी।

© JCERT not to be republished

कूड़ कपट काया का निकस्या, हरि की गति जब जाँणी।।
आँधी पीछै जो जल बूठा, प्रेम हरि जन भींनाँ।
कहें कबीर भाँन के प्रगटे उदित भया तम खीनाँ।।

काव्यांश-2

शब्दार्थ- भ्रम-संदेह। टाटी-घास-फूस तथा बाँस की फट्टियों से बनाया गया आवरण। उड़ाँनी-उड़ गई। माया-मोह (रस्सी)। बाँधी-बँधकर। हिति-स्वार्थ। चिति-चित्त। द्वे-दो। थूनी-सहारे के लिए लगाई गई लकड़ी, टेक। गिराँनी-गिर गई। बलिंडा-मोटी बल्ली जो छप्पर के बीचोंबीच बाँधी जाती है। तूटा-टूट गया। त्रिस्ना-तृष्णा, लालच। छाँनि-छप्पर। कुबुधि-दुर्बुद्धि। भाँडाँ-बर्तन। जोग जुगति-योग साधना के उपाय। निरचू-तनिक भी। चुबै-टपकना। निकस्या-निकल गया। जाँणी-समझ में आई। बूठा-बरसा। भीना-भीग गया। भाँन (भानु)-सूरज। उदित भया-निकल आया। तम-अंधकार। खीना-क्षीण या नष्ट होना।

प्रसंग- प्रस्तुत काव्यांश 'साखियाँ एवं सबद' शीर्षक पाठ से लिया गया है। इसके रचयिता कबीरदास जी हैं। इस सबद में ज्ञान रूपी आँधी के आने के पश्चात् ईश्वर प्रेम रुपी बारिश से होने वाला आनंद का चित्रण किया गया है।

© JCERT not to be republished

व्याख्या- ज्ञान का महत्त्व प्रतिपादित करते हुए कहा गया है कि हे संतों! ज्ञान की आँधी आ गई है। उसके प्रभाव से भ्रम का आवरण उड़ गया। वह माया की रस्सी से बँधा न रह सका। स्वार्थ के खंभे तथा मोह की बल्लियाँ टूट गईं। तृष्णा का छप्पर गिरने से कुबुद्धि के सभी बर्तन टूट गए। संतों ने योग-साधना के उपायों से नए मज़बूत छप्पर को बनाया जिससे तनिक भी पानी नहीं टपकता है। जब संतों को प्रभु का मर्म पता चला तब उनका शरीर निष्कपट हो गया। इस ज्ञान रूपी आँधी के कारण प्रभु-भक्ति की जो वर्षा हुई उससे भक्त हरि के प्रेम में भीग गए। इस प्रकार ज्ञान के सूर्योदय से संतों के मन का अंधकार नष्ट हो गया।

विशेष- i. उपमा एवं रुपक अलंकार का सुंदर प्रयोग हुआ है।
ii. रूपकों एवं प्रतीकों का प्रयोग से काव्य सुंदर बन पड़ा है।
iii. मन की पवित्रता पर बल है।
iv. ईश्वर सर्वत्र व्याप्त है।

प्रश्नोत्तर

प्रश्न 1. 'मानसरोवर' से कवि का क्या आशय है?

उत्तर- मानसरोवर के दो अर्थ हैं-

1. एक पवित्र सरोवर जिसमें हंस विहार करते हैं।

2. पवित्र मन या मानस।

प्रश्न 2. कवि ने सच्चे प्रेमी की क्या कसौटी बताई है?

उत्तर- कवि के अनुसार सच्चे प्रेमी वह है जिसका मन विकारों से दूर तथा पवित्र होता है। इस पवित्रता का असर उनकी संगति करने वालों पर पड़ता है। ऐसे प्रेमी से मिलने पर मन की पवित्रता और सारे पाप नष्ट हो जाते हैं।

प्रश्न 3. तीसरे दोहे में कवि ने किस प्रकार के ज्ञान को महत्त्व दिया है?

उत्तर- इस दोहे में अनुभव से प्राप्त आध्यात्मिक ज्ञान को महत्त्व दिया गया है।

प्रश्न 4. इस संसार में सच्चा संत कौन कहलाता है?

उत्तर- इस संसार में सच्चा संत वही है जो जाति-धर्म, संप्रदाय आदि के भेदभाव से दूर रहकर प्रभु की सच्ची भक्ति करता है ।

प्रश्न 5. अंतिम दो दोहों के माध्यम से कबीर ने किस तरह की संकीर्णताओं की ओर संकेत किया है?

उत्तर- अंतिम दो दोहों में कबीर ने निम्नलिखित संकीर्णताओं की ओर संकेत किया है-

i. अपने-अपने मत को श्रेष्ठ मानने की संकीर्णता और दूसरे के धर्म की निंदा करने की संकीर्णता।

ii. ऊँचे कुल के अहंकार में जीने की संकीर्णता।

प्रश्न 6. किसी भी व्यक्ति की पहचान उसके कुल से होती है या उसके कर्मों से? तर्क सहित उत्तर दीजिए।

उत्तर- किसी भी व्यक्ति की पहचान उसके कर्म से होती है, कुल से नहीं। कोई व्यक्ति यदि ऊँचे कुल में जन्म लेकर बुरे कर्म करता है तो वह निंदनीय होता है। इसके विपरीत यदि साधारण परिवार में जन्म लेकर कोई व्यक्ति यदि अच्छे कर्म करता है तो समाज में आदरणीय बन जाता है। सूर, कबीर, तुलसी और अनेकानेक ऋषि-मुनि साधारण से परिवार में जन्मे पर अपने अच्छे कर्मों से आदरणीय बन गए। इसके विपरीत कंस, दुर्योधन, रावण आदि बुरे कर्मों के कारण निंदनीय हो गए।

प्रश्न 7. काव्य सौंदर्य स्पष्ट कीजिए-

हस्ती चढ़िए ज्ञान कौ, सहज दुलीचा डारि।

स्वान रूप संसार है, भूँकन दे झख मारि।

उत्तर-

भाव-सौंदर्य -ज्ञान का महत्त्व को प्रतिपादित करते हुए कबीर जी कहते हैं कि मनुष्य को

© JCERT not to be republished

ज्ञान रूपी हाथी की सवारी सहज साधना रूपी कालीन डालकर ही करना चाहिए। ऐसा करते हुए यदि कुत्ता रूपी संसार उसकी आलोचना करता है तो मनुष्य को उसकी परवाह नहीं करना चाहिए।

शिल्प-सौंदर्य-

i. सांगरूपक अलंकार का कुशलतापूर्वक प्रयोग किया गया है-

ज्ञान रूपी हाथी

सहज साधना रूपी दुलीचा,

निंदक संसार रूपी श्वान,

निंदा रूपी भौंकना,

'स्वान रूप संसार है' एक सशक्त उपमा है।

ii. सधुक्कड़ी भाषा का प्रयोग है। इसमें 'हस्ती', 'स्वान', 'ज्ञान' आदि तत्सम शब्दों का प्रयोग है।

iii. भक्ति रस की प्रधानता है।

iv. 'झख मारि' मुहावरे का सुंदर प्रयोग।

सबद (पद)

प्रश्न 8. मनुष्य ईश्वर को कहाँ-कहाँ ढूँढ़ता फिरता है?

उत्तर-मनुष्य अपने धर्म-संप्रदाय और सोच-विचार के अनुसार ईश्वर को मंदिर, मस्जिद, काबा, कैलाश जैसे पूजा स्थलों और धार्मिक स्थानों पर ढूँढ़ता है। ईश्वर को पाने के लिए कुछ लोग योग साधना करते हैं तो कुछ सांसारिकता से दूर होकर संन्यासी-बैरागी बन जाते हैं और इन क्रियाओं के माध्यम से ईश्वर को पाने का प्रयास करते हैं।

प्रश्न 9. कबीर ने ईश्वर-प्राप्ति के लिए किन प्रचलित विश्वासों का खंडन किया है?

उत्तर-कबीर ने ईश्वर प्राप्ति के निम्नलिखित प्रचलित विश्वासों का खंडन किया है-

i. ईश्वर का वास मंदिर-मस्जिदों में होता है।

ii. ईश्वर का वास काबा, कैलाश आदि तीर्थ स्थलों में होता है।

iii. ईश्वर कर्मकांड करने से मिलता है।

iv. ईश्वर योग या वैराग से मिलता है॥

प्रश्न 10. कबीर ने ईश्वर को 'सब स्वाँसों की स्वाँस में' क्यों कहा है?

उत्तर- इस संसार में सभी प्राणियों की रचना ईश्वर द्वारा की गई है। आत्मा के रूप में उसी ईश्वर का अंश प्रत्येक व्यक्ति में निहित है। प्रत्येक जीव के जीवित रहने का कारण भी वही है, इसलिए कवि ने ईश्वर को 'सब स्वाँसों की स्वाँस में' कहा है।

प्रश्न 11. कबीर ने ज्ञान के आगमन की तुलना सामान्य हवा से न कर आँधी से क्यों की?

उत्तर- कबीर दास जी ने ज्ञान के आगमन की तुलना सामान्य हवा से न करके आँधी से इसलिए की है क्योंकि सामान्य हवा धीरे-धीरे चलकर आसपास की वस्तुओं को प्रभावित नहीं कर पाती है जबकि आँधी तेज गति से चलकर वस्तुओं की स्थिति में परिवर्तन ला

© JCERT not to be republished

देती है। जिस प्रकार इस आँधी के माध्यम से छोटी-छोटी वस्तुएँ, कूड़ा-करकट, पत्तियाँ, घास-फूस उड़कर कहीं दूर चली जाती है। उसी प्रकार ज्ञान की आँधी आने से मनुष्य के मन पर पड़ा हुआ अज्ञान का पर्दा भी उड़ कर कहीं दूर चला जाता है। मोह-माया, स्वार्थ आदि जैसी बुराइयाँ भी उड़कर कहीं दूर चली जाती हैं। शरीर से कपट रूपी कूड़ा-करकट उड़ जाता है। उसका मन सांसारिक बंधनों से मुक्त होकर प्रभु की भक्ति में लीन हो जाता है।

प्रश्न 12. ज्ञान की आँधी का मानव के जीवन पर क्या प्रभाव पड़ता है?

उत्तर- ज्ञान की आँधी के प्रभाव से भक्त के मन पर पड़ा हुआ भ्रम और अज्ञान का पर्दा हट गया। भक्त के मन का अंधकार भी दूर हो गया। वह मोह-माया के बंधनों से मुक्त हो गया तथा उसका मन निश्छल हो गया और प्रभुभक्ति में लीन हो सच्ची भक्ति करने लगा। उसकी परमात्मा से पहचान हो गई।

प्रश्न 13. भाव स्पष्ट कीजिए

(क) हिति चित्त की है थूनी गिराँनी, मोह बलिंडा टूटा।

(ख) आँधी पीछै जो जल बूठा, प्रेम हरि जन भीनाँ।

उत्तर -

(क) यहाँ ज्ञान की आँधी के कारण मनुष्य मन पर पड़े प्रभाव के फलस्वरूप मनुष्य के स्वार्थ रूपी दोनों खंभे टूट गए, तथा मोह रूपी बल्ली भी गिर गई। इससे उसका कामना रूपी छप्पर नीचे गिर गया। उसके मन की बुराइयाँ नष्ट हो गई। उसका मन साफ हो गया।

(ख) ज्ञान की आँधी के बाद मन प्रभु की भक्ति में रम जाता है। प्रभु भक्ति रूपी ज्ञान की वर्षा के कारण मन प्रेम रूपी जल से भीग जाता है और वह आनंदित हो उठता है। अर्थात् ज्ञान की प्राप्ति के बाद उसका मन शुद्ध हो जाता है।

© JCERT not to be republished

वस्तुनिष्ठ प्रश्नोत्तर

1. कबीर दास ने किए-

(a) समाज सुधार के कार्य।

(b) आर्थिक सुधार के कार्य।

(c) धार्मिक कार्य।

(d) धार्मिक व आर्थिक दोनों।

उत्तर-(a) समाज सुधार के कार्य

2. कबीर दास जी-

(a) सगुण के उपासक थे।

(b) सगुण और निर्गुण दोनों के उपासक थे।

(c) नास्तिक थे।

(d) निर्गुण के उपासक थे।

उत्तर -(d) निर्गुण के उपासक थे।

3. कबीर दास के गुरु का नाम था–

(a) सत्यानंद (b) रामानंद

(c) ब्रह्मानंद (d) ईश्वरानंद

उत्तर (b) रामानंद

4. कबीर दास के माता-पिता का नाम था–

(a) शेरु व सीमा

(b) हरिया व हीरा

(c) नीरू और नीमा

(d) रामू और श्यामा

उत्तर (c) नीरू और नीमा

5. कबीर दास का जन्म कब और कहाँ हुआ?

(a) सन् 1398 में वाराणसी में

(b) सन् 1459 में प्रयाग में

(c) सन् 1393 में मथुरा में

(d) सन् 1430 में आगरा में

उत्तर (a) सन् 1398 में वाराणसी में

6. कबीर दास जी ने ज्ञानी और संत किसे बताया–

(a) जो अपने धर्म सम्प्रदाय का ख्याल रखता है।

(b) जो सदा ईश्वर -भक्ति में लीन रहता है।

(c) जो सरल हृदय से निष्पक्ष होकर सम्प्रदायों से ऊपर उठकर प्रभु का ध्यान करता है।

(d) जो कठोर साधना में लीन रहता है।

उत्तर (c) जो सरल हृदय से निष्पक्ष होकर सम्प्रदायों से ऊपर उठकर प्रभु का ध्यान करता है।

7. मनुष्य कब महान कहलाता है?

(a) जब वह ऊँचे कुल में जन्म लेता है।

(b) जब उसके माँ बाप धनी होते हैं।

(c) जब वह अपने धर्म सम्प्रदाय को बढ़ावा देता है।

(d) जब उनके कर्म ऊँचे होते हैं।

उत्तर (d) जब उनके कर्म ऊँचे होते हैं।

8. कबीर की रचनाएँ संकलित हैं–

(a) सूरसागर में

(b) बीजक में।

(c) सूर सारावली में।

(d) उपर्युक्त में से कोई नहीं।

उत्तर (b) बीजक में।

9. कबीर की रचनाएँ हमें मिलती हैं–

(a) साखी के रूप में।

(b) सबद के रूप में।

(c) रमैनी के रूप में।

(d) सभी कथन सत्य हैं।

उत्तर (d) सभी कथन सत्य हैं।

© JCERT not to be republished

10. ज्ञान की आँधी आने पर क्या होता है?

(a) मनुष्य का भ्रम दूर हो जाता है।

(b) माया-मोह से छुटकारा मिल जाता है।

(c) मनुष्य की अज्ञानता समाप्त हो जाती है।

(d) उपर्युक्त सभी कथन सत्य है।

उत्तर (d) उपर्युक्त सभी कथन सत्य है।

11. 'मान सरोवर .... अनंत न जाहि' इस साखी में कौन-सा अलंकार है?

(a) अन्योक्ति (b) रूपक

(c) श्लेष (d) उपमा

उत्तर (a) अन्योक्ति

12. 'मान सरोवर .... अनत न जाहि' इस साखी में हंस और मानसरोवर क्रमशः किसके प्रतीक हैं-

(a) हंस परमात्मा का और मानसरोवर मन का प्रतीक।

(b) हंस जीवात्मा का और मानसरोवर आनंदवृत्ति वाले मन का एवं शून्य विकार के अमृत कुण्ड का प्रतीक है।

(c) हंस शून्य विकार का व मान सरोवर परमात्मा का प्रतीक है।

(d) उपर्युक्त सभी कथन सत्य हैं।

उत्तर (b) हंस जीवात्मा का और मानसरोवर आनंदवृत्ति वाले मन का एवं शून्य विकार के अमृत कुण्ड का प्रतीक है।

13. कवि के अनुसार 'संत-सुजान' कौन हो सकता है?

(a) गेरुए वस्त्र धारण करने वाला

(b) अपने पक्ष का प्रचार करने वाला

(c) जटा-जूट धारी

(d) निष्पक्ष भाव से प्रभु-स्मरण करने वाला

उत्तर- (a) निष्पक्ष भाव से प्रभु-स्मरण करने वाला

14. कबीर के अनुसार निर्गुण ब्रह्म कहाँ मिलता है?

(a) मंदिर में (b) कैलाश पर

(c) सर्वत्र (d) काबा में

उत्तर- (c) सर्वत्र

15. 'मोको कहाँ ढूंढ़े बंदे' पद में कवि ने ईश्वर को कहाँ ढूँढ़ने के लिए कहा है-

(a) मंदिर में (b) तीर्थों में

(c) मस्जिद में (d) अपने अंदर

उत्तर- (d) अपने अंदर

16. 'कुबुधि का भाँडाँ फूटा' से क्या आशय है?

(a) बर्तन गिर गए

(b) बर्तन टूट गए

(c) कुबधि भाँडाँ टूटा

(d) भेद खुल गया

उत्तर- (d) भेद खुल गया

© JCERT not to be republished

17. तृष्णा रूपी छप्पर को ज्ञान की किसने गिरा दिया?

(a) वर्षा (b) आँधी

(c) भूकंप (d) बाढ़

उत्तर- (b) आँधी

18. 'कहै कबीर भाँन के प्रगटे उदित भया तम खीनाँ' में 'भाँन' क्या है?

(a) सूर्य (b) चंद्रमा

(c) नक्षत्र (d) मंगल

उत्तर- (a) सूर्य

19. किसी भी व्यक्ति की पहचान किससे होती है?

(a) उसके कुल (b) उसके कर्म

(c) उसके वस्त्र (d) उसके भोजन

उत्तर- (b) उसके कर्म

20. काबा किनका पवित्र स्थान है?

(a) हिंदुओं का (b) सिक्खों का

(c) मुसलमानों का

(d) ईसाइयों का

उत्तर- (c) मुसलमानों का

21. 'झख मारना' क्या होता है?

(a) पंखा करना

(b) समय नष्ट करना

(c) कार्य करना

(d) शिकार करना

उत्तर- (b) समय नष्ट करना

22. 'आँधी पीछै जो जल बूठा' में 'बूठा' क्या है?

(a) बैठा (b) सोया

(c) चला (d) वर्षा

उत्तर- (d) वर्षा

23. कवि ने संसार को किसका रूप माना है?

(a) श्वान (b) सिंह

(c) सियार (d) हाथी

उत्तर- (a) श्वान

24. प्रेमी को प्रेमी मिल जाने पर क्या होता है?

(a) अमृत विष हो जाता है

(b) विष अमृत हो जाता है

(c) लोग जलते हैं

(d) सब कुछ नष्ट हो जाता है

उत्तर- (b) विष अमृत हो जाता है

25. 'हस्ती चढ़िए ज्ञान कौ' में 'हस्ति' क्या है?

(a) हाथ (b) हिम्मत

(c) हाथी (d) नास्ति

उत्तर- (c) हाथी

26. खोजी को परमात्मा कितनी देर की तलाश में मिल जाता है?

(a) पलभर (b) एक वर्ष

(c) एक माह (d) एक सप्ताह

उत्तर- (a) पलभर

© JCERT not to be republished